

हिंदी

कक्षा IX

अध्याय 3- तुम कब जाओगे, अतिथि

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1. अतिथि कितने दिनों से लेखक के घर पर रह रहा है?

उत्तर-अतिथि चार दिनों से लेखक के घर पर रह रहा है।

प्रश्न 2. कैलेंडर की तारीखें किस तरह फड़फड़ा रही हैं?

उत्तर-कैलेंडर की तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फड़फड़ा रही हैं। मानों वे भी अतिथि को बता रही हों कि तुम्हें यहाँ आए। दो-तीन दिन बीत चुके हैं।

प्रश्न 3. पति-पत्नी ने मेहमान का स्वागत कैसे किया?

उत्तर-पति-पत्नी ने मेहमान का स्वागत प्रसन्नतापूर्वक किया। पति ने स्नेह से भीगी मुसकान से उसे गले लगाया तथा पत्नी ने सादर नमस्ते की।

प्रश्न 4. दोपहर के भोजन को कौन-सी गरिमा प्रदान की गई?

उत्तर-दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की गई।

प्रश्न 5. तीसरे दिन सुबह अतिथि ने क्या कहा?

उत्तर-अतिथि ने तीसरे दिन कहा कि वह अपने कपड़े धोबी को देना चाहता है।

प्रश्न 6. सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने पर क्या हुआ?

उत्तर-सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने पर लेखक उच्च मध्यमवर्गीय डिनर से खिचड़ी पर आ गया। यदि इसके बाद भी अतिथि नहीं गया तो उसे उपवास तक जाना पड़ सकता है।

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1.लेखक अतिथि को कैसी विदाई देना चाहता था?

उत्तर-लेखक अपने अतिथि को भावभीनी विदाई देना चाहता था। वह चाहता था कि अतिथि को छोड़ने के लिए रेलवे स्टेशन तक जाया जाए। उसे बार-बार रुकने का आग्रह किया जाए, किंतु वह न रुके।

प्रश्न 2.पाठ में आए निम्नलिखित कथनों की व्याख्या कीजिए-

1. अंदर ही अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया।
2. अतिथि सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है।
3. लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़े।
4. मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी।
5. एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते।

उत्तर-

1. बिना सूचना दिए अतिथि को आया देख लेखक परेशान हो गया। वह सोचने लगा कि अतिथि की आवभगत में उसे अतिरिक्त खर्च करना पड़ेगा जो उसकी जेब के लिए भारी पड़ने वाला है।
2. अतिथि देवता होता है पर अपना देवत्व बनाए रखकरे। यदि अतिथि अगले दिन वापस नहीं जाता है और मेजबान के लिए पीड़ा का कारण बनने लगता है तो मनुष्य न रहकर राक्षस नज़र आने लगता है। देवता कभी किसी के दुख का कारण नहीं बनते हैं।
3. जब अतिथि आकर समय से नहीं लौटते हैं तो मेजबान के परिवार में अशांति बढ़ने लगती है। उस परिवार का चैन खो जाता है। पारिवारिक समरसता कम होती जाती है और अतिथि का ठहरना बुरा लगने लगता है।
4. पहले दिन के बाद से ही लेखक को अतिथि का रुकना भारी पड़ रहा था। दूसरा तीसरा दिन तो जैसे तैसे बीता पर अगले दिन वह सोचने लगा कि यदि अतिथि पाँचवें दिन रुका तो उसे गेट आउट कहना पड़ेगा।
5. देवता कुछ ही समय ठहरते हैं और दर्शन देकर चले जाते हैं। अतिथि कुछ ही समय के लिए देवता होते हैं, ज्यादा दिन ठहरने पर मनुष्य के लिए वह भारी पड़ने लगता है तब किसी भी तरह अतिथि को जाना ही पड़ता है।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1. कौन-सा आघात अप्रत्याशित था और उसका लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर-तीसरे दिन मेहमान का यह कहना कि वह धोबी से कपड़े धुलवाना चाहता है, एक अप्रत्याशित आघात था। यह फरमाइश एक ऐसी चोट के समान थी जिसकी लेखक ने आशा नहीं की थी। इस चोट का लेखक पर यह प्रभाव पड़ा कि वह अतिथि को राक्षस की तरह मानने लगा। उसके मन में अतिथि के प्रति सम्मान की बजाय बोरियत, बोझिलता और तिरस्कार की भावना आने लगी। वह चाहने लगा कि यह अतिथि इसी समय उसका घर छोड़कर चला जाए।

प्रश्न 2. 'संबंधों का संक्रमण के दौर से गुजरना'-इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं? विस्तार से लिखिए।

उत्तर-संबंधों का संक्रमण दौर से गुजरने का आशय है-संबंधों में बदलाव आना। इस अवस्था में कोई वस्तु अपना मूल स्वरूप खो बैठती है और कोई दूसरा रूप ही अख्तियार कर लेती है। लेखक के घर आया अतिथि जब तीन दिन से अधिक समय रुक गया तो ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई। लेखक ने उससे अनेकानेक विषयों पर बातें करके विषय का ही अभाव बना लिया था। इससे चुप्पी की स्थिति बन गई, जो बोरियत लगने लगी। इस प्रकार उत्साहजनक संबंध बदलकर अब बोरियत में बदलने लगे थे।

प्रश्न 3. जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो लेखक के व्यवहार में क्या-क्या परिवर्तन आए?

उत्तर-जब अतिथि चार दिन के बाद भी घर से नहीं टला तो लेखक के व्यवहार में निम्नलिखित परिवर्तन आए

- उसने अतिथि के साथ मुसकराकर बात करना छोड़ दिया। मुसकान फीकी हो गई। बातचीत भी बंद हो गई।
- शानदार भोजन की बजाय खिचड़ी बनवाना शुरू कर दी।
- वह अतिथि को 'गेट आउट' तक कहने को तैयार हो गया। उसके मन में प्रेमपूर्ण भावनाओं की जगह गालियाँ आने लगीं।

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्याय लिखिए-

1. चाँद
2. ज़िक्र
3. आघात
4. ऊष्मा
5. अंतरंग

उत्तर-

1. चाँद – शशि, राकेश
2. ज़िक्र – वर्णन, कथन
3. आघात – चोट, प्रहार ऊष्मा
4. ऊष्मा – ताप, गरमाहट
5. अंतरंग – घनिष्ठ, नजदीकी

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित कीजिए-

1. हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने जाएँगे। (नकारात्मक वाक्य)
2. किसी लॉण्डी पर दे देते हैं, जल्दी धुल जाएँगे। (प्रश्नवाचक वाक्य)
3. सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो रही थी। (भविष्यत् काल)
4. इनके कपड़े देने हैं। (स्थानसूचक प्रश्नवाची)
5. कब तक टिकेंगे ये? (नकारात्मक)

उत्तर-

1. हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने नहीं जाएँगे।
2. किसी लॉण्डी पर दे देने पर क्या जल्दी धुल जाएँगे।
3. सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो जाएगी।
4. इनके कपड़े कहाँ देने हैं?

अध्याय 3- तुम कब जाओगे, अतिथि

5. कब तक नहीं टिकेंगे ये?

प्रश्न 3. पाठ में आए इन वाक्यों में 'चुकना' क्रिया के विभिन्न प्रयोगों को ध्यान से देखिए और वाक्य संरचना को समझिए-

1. तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी ज़मीन पर अंकित कर चुके।
2. तुम मेरी काफ़ी मिट्टी खोद चुके।
3. आदर-सत्कार के जिस उच्च बिंदु पर हम तुम्हें ले जा चुके थे।
4. शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय चूक गए।
5. तुम्हारे भारी-भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी और तुम यहीं हो।

उत्तर-छात्र स्वयं चुकना क्रिया के विभिन्न प्रयोगों को ध्यान से देखें और वाक्य से रचना को समझें।

प्रश्न 4. निम्नलिखित वाक्य संरचनाओं में 'तुम' के प्रयोग पर ध्यान दीजिए-

1. लॉण्डी पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और तुम यहीं हो।
2. तुम्हें देखकर फूट पड़ने वाली मुसकुराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब लुप्त हो गई है।
3. तुम्हारे भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी।
4. कल से मैं उपन्यास पढ़ रहा हूँ और तुम फिल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहे हो।
5. भावनाएँ गालियों का स्वरूप ग्रहण कर रही हैं, पर तुम जा नहीं रहे।

उत्तर-उपर्युक्त वाक्यों में 'तुम' के सभी प्रयोग लेखक के घर आए अतिथि के लिए हुए हैं।

योग्यता विस्तार

प्रश्न 1. 'अतिथि देवो भव' उक्ति की व्याख्या करें तथा आधुनिक युग के संदर्भ में इसका आकलन करें।

उत्तर-भारतीय संस्कृति में अतिथि को देवता का दर्जा दिया गया है। उसे देवता के समान मानकर उसका आदर सत्कार किया जाता है। आज के भौतिकवादी युग में मनुष्य मशीनी जीवन जी रहा है। उसके पास अपने परिवार के लिए समय नहीं रह गया है तो अतिथि के लिए समय कैसे निकाले। इसके अलावा महँगाई के इस युग में जब

अध्याय 3- तुम कब जाओगे, अतिथि

अपनी जरूरतें पूरी करना कठिन हो रहा तो अतिथि का सत्कार जेब काटने लगता है। ऐसे में मनुष्य को अतिथि से दूर ही रहना चाहिए।

प्रश्न 2. विद्यार्थी अपने घर आए अतिथियों के सत्कार का अनुभव कक्षा में सुनाएँ।

उत्तर- विद्यार्थी अपने अनुभव स्वयं व्यक्त करें।

प्रश्न 3. अतिथि के अपेक्षा से अधिक रुक जाने पर लेखक की क्या-क्या प्रतिक्रियाएँ हुईं, उन्हें क्रम से छाँटकर लिखिए।

उत्तर- अतिथि के अपेक्षा से अधिक एक जाने पर लेखक परेशान एवं दुखी हो गया। उसने इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप-

- अतिथि को एस्ट्रोनॉट्स के समान बताकर जल्द चले जाने के बारे में सोचा।
- वह आतिथ्य सत्कार में होने वाले खर्च को सोचकर परेशान हो गया।
- उसे अतिथि देवता कम, मानव और कुछ अंशों में दानवे नज़र आने लगा।
- पाँचवें दिन रुकने पर उसने अतिथि को गेट आउट कहने तक का मन बना लिया।

अन्य पाठेतर हल प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'तुम कब जाओगे, अतिथि' यह प्रश्न लेखक के मन में कब घुमड़ने लगा?

उत्तर- 'तुम कब जाओगे, अतिथि'—यह प्रश्न लेखक के मन में तब घुमड़ने लगा जब लेखक ने देखा कि अतिथि को आए आज चौथा दिन है पर उसके मुँह से जाने की बात एक बार भी न निकली।

प्रश्न 2. लेखक अपने अतिथि को दिखाकर दो दिनों से कौन-सा कार्य कर रहा था और क्यों?

उत्तर- लेखक अपने अतिथि को दिखाकर दो दिनों से तारीखें बदल रहा था। ऐसा करके वह अतिथि को यह बताना चाह रहा था कि उसे यहाँ रहते हुए चौथा दिन शुरू हो गया है। तारीखें देखकर शायद उसे अपने घर जाने की याद आ जाए।

अध्याय 3- तुम कब जाओगे, अतिथि

प्रश्न 3.लेखक ने एस्ट्रानॉट्स का उल्लेख किस संदर्भ में किया है?

उत्तर-लेखक ने एस्ट्रानॉट्स का उल्लेख घर आए अतिथि के संदर्भ में किया है। लेखक अतिथि को यह बताना चाहता है कि लाखों मील लंबी यात्रा करने बाद एस्ट्रानॉट्स भी चाँद पर इतने समय नहीं रुके थे जितने समय से अतिथि उसके घर रुका हुआ है।

प्रश्न 4.‘आर्थिक सीमाओं की बैजनी चट्टान’ कहकर लेखक ने किस ओर संकेत किया है?

उत्तर-‘आर्थिक सीमाओं की बैजनी चट्टान’ कहकर अपनी कमजोर आर्थिक स्थिति की ओर संकेत किया है। लेखक के घर आया अतिथि चौथे दिन भी घर जाने के लिए संकेत नहीं देता है, जबकि उसके इतने दिन रुकने से लेखक के घर का बजट और उसकी आर्थिक स्थिति खराब होने लगी थी।

प्रश्न 5.अतिथि को आया देख लेखक की क्या दशा हुई और क्यों?

उत्तर-अतिथि को असमय आया देख लेखक ने सोचा कि यह अतिथि अब पता नहीं कितने दिन रुकेगा और इसके रुकने पर उसका आर्थिक बजट भी खराब हो जाएगी। इसका अनुमान लगाते ही लेखक का दृश्य किसी अज्ञात आशंका से धड़क उठा।

प्रश्न 6.लेखक ने घर आए अतिथि के साथ ‘अतिथि देवो भवः’ परंपरा का निर्वाह किस तरह किया?

उत्तर-लेखक ने अतिथि को घर आया देखकर स्नेह भीगी मुसकराहट के साथ उसका स्वागत किया और गले मिला। उसने अतिथि को भोजन के स्थान पर उच्च मध्यम वर्ग का डिनर करवाया, जिसमें दो-दो सब्जियों के अलावा रायता और मिष्ठान भी था। इस तरह उसने अतिथि देवो भव परंपरा का निर्वाह किया।

प्रश्न 7.लेखक ने अतिथि का स्वागत किसे आशा में किया?

उत्तर-लेखक ने अतिथि का स्वागत जिसे उत्साह और लगन के साथ किया उसके मूल में यह आशा थी कि अतिथि भी अपना देवत्व बनाए रखेगा और उसकी परेशानियों को ध्यान में रखकर अगले दिन घर चला जाएगा। जाते समय उसके मन पर शानदार मेहमान नवाजी की छाप होगी।

प्रश्न 8.लेखक ने ऐसा क्यों कहा है कि अतिथि मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है?

उत्तर-लेखक ने देखा कि दूसरे दिन वापस जाने के बजाय अतिथि तीसरे दिन धोबी को अपने कपड़े धुलने के लिए देने की बात कह रहा है। इसका अर्थ यह है कि वह अभी रुकना चाहता है। इस तरह अतिथि ने अपना देवत्व छोड़कर मानव और राक्षस वाले गुण दिखाना शुरू कर दिया है।

प्रश्न 9.लेखक और अतिथि के बीच सौहार्द अब बोरियत का रूप किस तरह लेने लगा था?

उत्तर-अतिथि जब लेखक के यहाँ चौथे दिन भी रुका रह गया तो लेखक के मन में जैसा उत्साह और रुचि थी वह सब समाप्त हो गया। उसने विविध विषयों पर बातें कर लिया था। अब और बातों का विषय शेष न रह जाने के कारण दोनों के बीच चुप्पी छाई थी। यह चुप्पी अब सौहार्द की जगह बोरियत का रूप लेती जा रही थी।

प्रश्न 10.यदि अतिथि पाँचवें दिन भी रुक गया तो लेखक की क्या दशा हो सकती थी?

उत्तर-यदि अतिथि पाँचवें दिन भी रुक जाता तो लेखक की बची-खुची सहनशक्ति भी जवाब दे जाती। वह आतिथ्य के बोझ को और न सह पाता। डिनर से उतरकर खिचड़ी से होते हुए उपवास करने की स्थिति आ जाती। वह किसी भी स्थिति में अतिथि का सत्कार न कर पाता।

प्रश्न 11.लेखक के अनुसार अतिथि का देवत्व कब समाप्त हो जाता है?

उत्तर-लेखक का मानना है कि अतिथि देवता होता है, पर यह देवत्व उस समय समाप्त हो जाता है जब अतिथि एक दिन से ज्यादा किसी के यहाँ ठहर कर मेहमान नवाजी का आनंद उठाने लगता है। उसका ऐसा करना मेजबान पर बोझ बनने लगता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.लेखक के व्यवहार में आधुनिक सभ्यता की कमियाँ झलकने लगती हैं। इससे आप कितना सहमत हैं, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-लेखक पहले तो घर आए अतिथि का गर्मजोशी से स्वागत करता है परंतु दूसरे ही दिन से उसके व्यवहार में बदलाव आने लगता है। यह बदलाव आधुनिक सभ्यता की कमियों का स्पष्ट लक्षण है। मैं इस बात से पूर्णतया

अध्याय 3- तुम कब जाओगे, अतिथि

सहमत हूँ। लेखक जिस अतिथि को देवतुल्य समझता है वही अतिथि मनुष्य और कुछ अंशों में राक्षस-सा नजर आने लगता है। उसे अपनी सहनशीलता की समाप्ति दिखाई देने लगती है तथा अपना बजट खराब होने लगता है, जो आधुनिक सभ्यता की कमियों का स्पष्ट प्रमाण है।

प्रश्न 2. दूसरे दिन अतिथि के न जाने पर लेखक और उसकी पत्नी का व्यवहार किस तरह बदलने लगता है?

उत्तर-लेखक के घर जब अतिथि आता है तो लेखक मुसकराकर उसे गले लगाता है और उसका स्वागत करता है। उसकी पत्नी भी उसे सादर नमस्ते करती है। उसे भोजन के बजाय उच्च माध्यम स्तरीय डिनर करवाते हैं। उससे तरह-तरह के विषयों पर बातें करते हुए उससे सौहार्द प्रकट करते हैं परंतु तीसरे दिन ही उसकी पत्नी खिचड़ी बनाने की बात कहती है। लेखक भी बातों के विषय की समाप्ति देखकर बोरियत महसूस करने लगता है। अंत में उन्हें अतिथि देवता कम मनुष्य और राक्षस-सा नज़र आने लगता है।

प्रश्न 3. अतिथि रूपी देवता और लेखक रूपी मनुष्य को साथ-साथ रहने में क्या परेशानियाँ दिख रही थीं?

उत्तर-भारतीय संस्कृति में अतिथि को देवता माना गया है जिसका स्वागत करना हर मनुष्य का कर्तव्य होता है। इस देवता और अतिथि को साथ रहने में यह परेशानी है कि देवता दर्शन देकर चले जाते हैं, परंतु आधुनिक अतिथि रूपी देवता मेहमान नवाजी का आनंद लेने के चक्कर में मनुष्य की परेशानी भूल जाते हैं। जिस मनुष्य की आर्थिक स्थिति अच्छी न हो उसके लिए आधुनिक देवता का स्वागत करना और भी कठिन हो जाता है।

प्रश्न 4. 'तुम कब जाओगे, अतिथि' पाठ की प्रासंगिकता आधुनिक संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-'तुम कब जाओगे, अतिथि' नामक पाठ में बिना पूर्व सूचना के आने वाले उस अतिथि का वर्णन है जो मेहमान नवाजी का आनंद लेने के चक्कर में मेजबान की परेशानियों को नज़रअंदाज कर जाता है। अतिथि देवता को नाराज़ न करने के चक्कर में मेजबान हर परेशानी को झेलने के लिए विवश रहता है। वर्तमान समय और इस महँगाई के युग में जब मनुष्य अपनी ही ज़रूरतें पूरी करने में अपने आपको असमर्थ पा रहा है और उसके पास समय और साधन की कमी है तब ऐसे अतिथि का स्वागत सत्कार करना कठिन होता जा रहा है। अतः यह पाठ आधुनिक संदर्भों में पूरी तरह प्रासंगिक है।

प्रश्न 5.लेखक को ऐसा क्यों लगने लगा कि अतिथि सदैव देवता ही नहीं होते?

उत्तर-लेखक ने देखा कि उसके यहाँ आने वाले अतिथि उसकी परेशानी को देखकर भी अनदेखा कर रहा है और उस पर बोझ बनता जा रहा है। चार दिन बीत जाने के बाद भी वह अभी जाना नहीं चाहता है जबकि देवता दर्शन देकर लौट जाते हैं। वे इतना दिन नहीं ठहरते। इसके अलावा वे मनुष्य को दुखी नहीं करते तथा उसकी हर परेशानी का ध्यान रखते हैं। अपने घर आए अतिथि का ऐसा व्यवहार देखकर लेखक को लगने लगता है कि हर अतिथि देवता नहीं होता है।

तुम कब जाओगे अतिथि पाठ व्याख्या

पाठ – आज तुम्हारे आगमन के चतुर्थ दिवस पर यह प्रश्न बार-बार मन में घुमड़ रहा है-**तुम कब जाओगे, अतिथि?**

तुम जहाँ बैठे निस्संकोच सिगरेट का धुआँ फेंक रहे हो, उसके ठीक सामने एक कैलेंडर है। देख रहे हो ना! इसकी तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फड़फड़ाती रहती हैं। विगत दो दिनों से मैं तुम्हें दिखाकर तारीखें बदल रहा हूँ। तुम जानते हो, अगर तुम्हें हिसाब लगाना आता है कि यह चौथा दिन है, तुम्हारे सतत आतिथ्य का चौथा भारी दिन! पर तुम्हारे जाने की कोई संभावना प्रतीत नहीं होती।

लाखों मील लंबी यात्रा करने के बाद वे दोनों एस्ट्रॉनॉट्स भी इतने समय चाँद पर नहीं रुके थे, जितने समय तुम एक छोटी-सी यात्रा कर मेरे घर आए हो। तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी ज़मीन पर अंकित कर चुके, तुमने एक अंतरंग निजी संबंध मुझसे स्थापित कर लिया, तुमने मेरी आर्थिक सीमाओं की बैजनी चट्टान देख ली; तुम मेरी काफ़ी मिट्टी खोद चुके।

अब तुम लौट जाओ, अतिथि! तुम्हारे जाने के लिए यह उच्च समय अर्थात् हाईटाइम है। क्या तुम्हें तुम्हारी पृथ्वी नहीं पुकारती?

शब्दार्थ

चतुर्थ दिवस – चार दिन

निस्संकोच – बिना संकोच के

एस्ट्रॉनॉट्स – अन्तरिक्ष यात्री

अंतरंग – घनिष्ट

व्याख्या – लेखक अपने घर में आए अतिथि को अपने मन में संबोधित करते हुए कहता है कि आज अतिथि को लेखक के घर में आए हुए चार दिन हो गए हैं और लेखक के मन में यह प्रश्न बार-बार आ रहा है कि ‘तुम कब जाओगे, अतिथि?’ लेखक अपने मन में अतिथि को कहता है कि वह जहाँ बैठे बिना संकोच के सिगरेट का धुआँ उड़ा रहा है, उसके ठीक सामने एक कैलेंडर है। अतिथि को दिख रहा होगा कि उस कैलेंडर की तारीखें अपनी सीमा जानती हैं और अपना वक्त आते ही अपने नर्म स्वभाव के रहते बदलने के लिए आतुर रहती हैं। लेखक

अध्याय 3- तुम कब जाओगे, अतिथि

कहता है कि पिछले दो दिनों से वह अतिथि को कैलेंडर दिखाकर तारीखें बदल रहा है। लेखक अपने मन में अतिथि को कहता है कि अगर उसे हिसाब लगाना आता है कि यह चौथा दिन है। अतिथि की लगातार आवभगत का यह चौथा भारी दिन है। ऐसा लेखक ने इसलिए कहा है क्योंकि लेखक अतिथि की सेवा करके थक गया है। पर चौथे दिन भी अतिथि के जाने की कोई संभावना नहीं लग रही थी। लाखों मील लंबी यात्रा करने के बाद वे दोनों अन्तरिक्ष यात्री भी इतने समय चाँद पर नहीं रुके थे, जितने समय लेखक के अतिथि एक छोटी-सी यात्रा कर लेखक के घर आए थे। लेखक अपने मन में अतिथि को कहता है कि अतिथि ने अपने भारी चरण-कमलों की छाप लेखक की ज़मीन पर अंकित कर ली थी, उसने एक घनिष्ठ निजी संबंध लेखक से स्थापित कर लिया, उसने लेखक की आर्थिक सीमाओं को देख लिया था। लेखक अपने मन में अतिथि को कहता है कि अब तुम लौट जाओ, अतिथि! तुम्हारे जाने के लिए यह उच्च समय अर्थात् हाईटाइम बिल्कुल सही वक्त है। क्या उसे उसकी मातृभूमि नहीं पुकारती? अर्थात् क्या उसे उसके घर की याद नहीं आती।

पाठ – उस दिन जब तुम आए थे, मेरा हृदय किसी अज्ञात आशंका से धड़क उठा था। अंदर-ही-अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया। उसके बावजूद एक स्नेह-भीगी मुसकराहट के साथ मैं तुमसे गले मिला था और मेरी पत्नी ने तुम्हें सादर नमस्ते की थी। तुम्हारे सम्मान में ओ अतिथि, हमने रात के भोजन को एकाएक उच्च-मध्यम वर्ग के डिनर में बदल दिया था। तुम्हें स्मरण होगा कि दो सब्ज़ियों और रायते के अलावा हमने मीठा भी बनाया था। इस सारे उत्साह और लगन के मूल में एक आशा थी। आशा थी कि दूसरे दिन किसी रेल से एक शानदार मेहमाननवाज़ी की छाप अपने हृदय में ले तुम चले जाओगे। हम तुमसे रुकने के लिए आग्रह करेंगे, मगर तुम नहीं मानोगे और एक अच्छे अतिथि की तरह चले जाओगे। पर ऐसा नहीं हुआ! दूसरे दिन भी तुम अपनी अतिथि-सुलभ मुसकान लिए घर में ही बने रहे। हमने अपनी पीड़ा पी ली और प्रसन्न बने रहे। स्वागत-सत्कार के जिस उच्च बिंदु पर हम तुम्हें ले जा चुके थे, वहाँ से नीचे उतर हमने फिर दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की और रात्रि को तुम्हें सिनेमा दिखाया। हमारे सत्कार का यह आखिरी छोर है, जिससे आगे हम किसी के लिए नहीं बढ़ें। इसके तुरंत बाद भावभीनी विदाई का वह भीगा हुआ क्षण आ जाना चाहिए था, जब तुम विदा होते और हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने जाते। पर तुमने ऐसा नहीं किया।

शब्दार्थ

अज्ञात आशंका – अन्जान डर

स्नेह-भीगी – प्यार से भीगी

भावभीनी – प्रेम से ओत-प्रोत

व्याख्या – लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि उस दिन जब वह आया था तो लेखक का हृदय ना जाने किसी अनजान डर से धड़क उठा था। अंदर-ही-अंदर कहीं लेखक का बटुआ काँप गया। उसके बावजूद एक प्यार से भीगी हुई मुसकुराहट के साथ लेखक ने अतिथि को गले लगाया था और लेखक की पत्नी ने अतिथि को सादर नमस्ते की थी। लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि उसके सम्मान में हमने उन्हें रात के भोजन को

अध्याय 3- तुम कब जाओगे, अतिथि

एकाएक उच्च-मध्यम वर्ग के डिनर में बदल दिया था। अतिथि को स्मरण याद होगा कि दो सज्जियों और रायते के अलावा उन्होंने मीठा भी बनाया था। इस सारे उत्साह और लगन के मूल में लेखक को एक उम्मीद थी। यह उम्मीद थी कि दूसरे दिन किसी रेल से एक शानदार अतिथि सत्कार की छाप अपने हृदय में ले कर अतिथि चला जायेगा। लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि वे अतिथि को रुकने के लिए आग्रह करेंगे, मगर अतिथि नहीं मानेगा और एक अच्छे अतिथि की तरह चले जाएगा। पर ऐसा नहीं हुआ! दूसरे दिन भी अतिथि मुस्कान बनाए लेखक के घर में ही बने रहे। लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि उन्होंने अपने दुःख को पी लिया और प्रसन्न बने रहे। स्वागत-सत्कार के जिस उच्च बिंदु पर लेखक अतिथि को ले जा चुके थे, वहाँ से नीचे उतर लेखक ने फिर दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की और रात्रि को अतिथि को सिनेमा दिखाया। लेखक के सत्कार का यह आखिरी छोर था, जिससे आगे लेखक कभी किसी के लिए नहीं बढ़े। इसके तुरंत बाद लेखक को अनुमान था कि विदाई का वह प्रेम से ओत-प्रोत भीगा हुआ क्षण आ जाना चाहिए था, जब अतिथि विदा होता और लेखक उसे स्टेशन तक छोड़ने जाता। पर अतिथि ने ऐसा नहीं किया। वह लेखक के घर पर ही रहा।

पाठ – तीसरे दिन की सुबह तुमने मुझसे कहा, “मैं धोबी को कपड़े देना चाहता हूँ।”

यह आघात अप्रत्याशित था और इसकी चोट मार्मिक थी। तुम्हारे सामीप्य की वेला एकाएक यों रबर की तरह खिंच जाएगी, इसका मुझे अनुमान न था। पहली बार मुझे लगा कि अतिथि सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है।

“किसी लॉण्डी पर दे देते हैं, जल्दी धुल जाएँगे।” मैंने कहा। मन-ही-मन एक विश्वास पल रहा था कि तुम्हें जल्दी जाना है।

“कहाँ है लॉण्डी?”

“चलो चलते हैं।” मैंने कहा और अपनी सहज बनियान पर औपचारिक कुर्ता डालने लगा।

“कहाँ जा रहे हैं?” पत्नी ने पूछा।

“इनके कपड़े लॉण्डी पर देने हैं।” मैंने कहा।

मेरी पत्नी की आँखें एकाएक बड़ी-बड़ी हो गईं। आज से कुछ बरस पूर्व उनकी ऐसी आँखें देख मैंने अपने अकेलेपन की यात्रा समाप्त कर बिस्तर खोल दिया था। पर अब जब वे ही आँखें बड़ी होती हैं तो मन छोटा होने लगता है। वे इस आशंका और भय से बड़ी हुई थीं कि अतिथि अधिक दिनों ठहरेगा।

शब्दार्थ

आघात अप्रत्याशित – अनसोचे प्रहार

औपचारिक – दिखावटी

व्याख्या – लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि तीसरे दिन की सुबह अतिथि ने लेखक से कहा कि वह धोबी को कपड़े देना चाहता है। लेखक के लिए यह सुनना अनसोचे प्रहार की तरह था और इसकी चोट बहुत मार्मिक थी।

अध्याय 3- तुम कब जाओगे, अतिथि

अतिथि से निकटता का यह पल एकाएक यों रबर की तरह खिंच जाएगा, इसका लेखक को कोई अनुमान न था। पहली बार लेखक को लगा कि अतिथि हमेशा देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है। लेखक अतिथि से कहता है कि कपड़ों को किसी लॉण्ड्री में दे देते हैं इससे वे जल्दी धुल जाएंगे, लेखक के मन में एक विश्वास पल रहा था कि शायद अतिथि को अब जल्दी जाना है। अतिथि ने लेखक से पूछा कि लॉण्ड्री कहाँ है? लेखक ने हमेशा की तरह अपनी बनियान और दिखावटी कुर्ता पहना और कहा कि चलो चलते हैं। इतने में लेखक की पत्नी ने पूछा कि वे लोग कहाँ जा रहे हैं? पत्नी के प्रश्न का उत्तर देते हुए लेखक कहता है कि अतिथि के कपड़े लॉण्ड्री में देने हैं। लेखक के इतना कहते ही लेखक की पत्नी की आँखें एकाएक बड़ी-बड़ी हो गईं। लेखक कहता है कि आज से कुछ बरस पूर्व उसकी ऐसी आँखें देख लेखक ने उससे शादी की थी। पर अब जब वे ही आँखें बड़ी होती हैं तो लेखक का मन छोटा होने लगता है। लेखक कहता है कि आज वे इस आशंका और भय से बड़ी हुई थीं कि अतिथि शायद अधिक दिनों तक ठहरेगा।

पाठ – और आशंका निर्मूल नहीं थी, अतिथि! तुम जा नहीं रहे। लॉण्ड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और तुम यहीं हो। तुम्हारे भरकम शरीर से सलवटे पड़ी चादर बदली जा चुकी और तुम यहीं हो। तुम्हें देखकर फूट पड़नेवाली मुसकराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब लुप्त हो गई है। ठहाकों के रंगीन गुब्बारे, जो कल तक इस कमरे के आकाश में उड़ते थे, अब दिखाई नहीं पड़ते। बातचीत की उछलती हुई गेंद चर्चा के क्षेत्रा के सभी कोनलों से टप्पे खाकर फिर सेंटर में आकर चुप पड़ी है। अब इसे न तुम हिला रहे हो, न मैं। कल से मैं उपन्यास पढ़ रहा हूँ और तुम फिल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहे हो। शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय चुक गए। परिवार, बच्चे, नौकरी, फिल्म, राजनीति, रिश्तेदारी, तबादले, पुराने दोस्त, परिवार-नियोजन, मँहगाई, साहित्य और यहाँ तक कि आँख मार-मारकर हमने पुरानी प्रेमिकाओं का भी शिक्र कर लिया और अब एक चुप्पी है। सौहार्द अब शनैः-शनैः बोरियत में रूपांतरित हो रहा है। भावनाएँ गालियों का स्वरूप ग्रहण कर रही हैं, पर तुम जा नहीं रहे। किस अदृश्य गोंद से तुम्हारा व्यक्तित्व यहाँ चिपक गया है, मैं इस भेद को सपरिवार नहीं समझ पा रहा हूँ। बार-बार यह प्रश्न उठ रहा है-तुम कब जाओगे, अतिथि? कल पत्नी ने धीरे से पूछा था, “कब तक टिकेंगे ये?”

मैंने कंधे उचका दिए, “क्या कह सकता हूँ!”

“मैं तो आज खिचड़ी बना रही हूँ। हलकी रहेगी।”

“बनाओ।”

शब्दार्थ

निर्मूल – बिना जड़ की

कोनलों – कोनो

सौहार्द – हृदय की सरलता

अध्याय 3- तुम कब जाओगे, अतिथि

व्याख्या – लेखक अपने मन ही कहता है कि उसकी पत्नी की आशंका बिना जड़ की नहीं थी, क्योंकि अतिथि जाने का नाम ही नहीं ले रहा था। लॉण्ड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और अतिथि अब भी लेखक के घर पर ही था। लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि उसके भरी भरकम शरीर से सलवटें पड़ी हुई चादर बदली जा चुकी है परन्तु अभी भी अतिथि यहीं है। अतिथि को देखकर फूट पड़नेवाली मुस्कराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब कहीं गायब हो गई है। ठहाकों के रंगीन गुब्बारे, जो कल तक इस कमरे के आकाश में उड़ते थे, अब दिखाई नहीं पड़ते। बातचीत की उछलती हुई गेंद चर्चा के क्षेत्र के सभी कोनों से टप्पे खाकर फिर सेंटर में आकर चुप पड़ी है। अब इसे न अतिथि हिला रहा है, न ही लेखक। लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि कल से लेखक उपन्यास पढ़ रहा है और अतिथि फिल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहा है। शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय चुक गए। परिवार, बच्चे, नौकरी, फिल्म, राजनीति, रिश्तेदारी, तबादले, पुराने दोस्त, परिवार-नियोजन, मँहगाई, साहित्य और यहाँ तक कि आँख मार-मारकर लेखक और अतिथि ने पुरानी प्रेमिकाओं का भी शिक्र कर लिया और अब एक चुप्पी है। हृदय की सरलता अब धीरे-धीरे बोरियत में बदल गई है। भावनाएँ गालियों का स्वरूप ग्रहण कर रही हैं, पर अतिथि जा नहीं रहा। लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि ऐसा लगता है कि किसी न दिखाई देने वाले गोंद से अतिथि का व्यक्तित्व लेखक के घर में चिपक गया है, लेखक इस भेद को सपरिवार नहीं समझ पा रहा है। लेखक के मन में बार-बार यह प्रश्न उठ रहा है-तुम कब जाओगे, अतिथि? कल लेखक की पत्नी ने धीरे से लेखक से पूछा था, “कब तक टिकेंगे ये?” लेखक ने कंधे उचका कर कहा कि वह क्या कह सकता है? लेखक की पत्नी ने अब गुस्से से कहा कि वह अब खिंचड़ी बनाएगी क्योंकि वह खाने में हल्की रहेगी। लेखक ने भी हाँ कह दिया।

पाठ – सत्कार की उष्मा समाप्त हो रही थी। डिनर से चले थे, खिंचड़ी पर आ गए। अब भी अगर तुम अपने बिस्तर को गोलाकार रूप नहीं प्रदान करते तो हमें उपवास तक जाना होगा। तुम्हारे-मेरे संबंध एक संक्रमण के दौर से गुज़र रहे हैं। तुम्हारे जाने का यह चरम क्षण है। तुम जाओ न अतिथि! तुम्हें यहाँ अच्छा लग रहा है न! मैं जानता हूँ। दूसरों के यहाँ अच्छा लगता है। अगर बस चलता तो सभी लोग दूसरों के यहाँ रहते, पर ऐसा नहीं हो सकता। अपने घर की महत्ता के गीत इसी कारण गाए गए हैं। होम को इसी कारण स्वीट-होम कहा गया है कि लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़ें। तुम्हें यहाँ अच्छा लग रहा है, पर सोचो प्रिय, कि शराफ़त भी कोई चीज़ होती है और गेट आउट भी एक वाक्य है, जो बोला जा सकता है।

अपने खर्चों से एक और रात गुंजायमान करने के बाद कल जो किरण तुम्हारे बिस्तर पर आएगी वह तुम्हारे यहाँ आगमन के बाद पाँचवें सूर्य की परिचित किरण होगी। आशा है, वह तुम्हें चूमेगी और तुम घर लौटने का सम्मानपूर्ण निर्णय ले लोगे। मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी। उसके बाद मैं स्टैंड नहीं कर सकूँगा और लड़खड़ा जाऊँगा। मेरे अतिथि, मैं जानता हूँ कि अतिथि देवता होता है, पर आखिर मैं भी मनुष्य हूँ। मैं कोई तुम्हारी तरह देवता नहीं। एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते। देवता दर्शन देकर लौट जाता

है। तुम लौट जाओ अतिथि! इसी में तुम्हारा देवत्व सुरक्षित रहेगा। यह मनुष्य अपनी वाली पर उतरे, उसके पूर्व तुम लौट जाओ! उफ, तुम कब जाओगे, अतिथि?

शब्दार्थ

गुंजायमान – गुँजित करने के

व्याख्या – लेखक अपने मन ही कहता है कि अतिथि के सत्कार करने की उसकी क्षमता अब समाप्त हो रही थी। डिनर से चले थे, खिचड़ी पर आ गए थे। अब भी अगर अतिथि अपने बिस्तर को गोलाकार रूप नहीं प्रदान करते अर्थात् अब भी अगर अतिथि नहीं जाता तो हमें लेखक और उसकी पत्नी को उपवास तक जाना होगा। लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि उन दोनों का रिश्ता अब एक संक्रमण के दौर से गुज़र रहा है। अतिथि के जाने का यह चरम क्षण है। लेखक चाहता है कि अतिथि अब चला जाए। लेखक अपने मन ही कहता है कि लेखक जानता है कि अतिथि को लेखक के घर में अच्छा लग रहा है। दूसरों के यहाँ अच्छा ही लगता है। अगर बस चलता तो सभी लोग दूसरों के यहाँ रहते, पर ऐसा नहीं हो सकता। लेखक कहता है कि अपने घर की महत्ता के गीत इसी कारण गाए गए हैं। होम को इसी कारण स्वीट-होम कहा गया है कि लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़ें। अतिथि को लेखक के घर में अच्छा लग रहा है, लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि सोचो प्रिय, कि शराफ़त भी कोई चीज़ होती है और गेट आउट भी एक वाक्य है, जो बोला जा सकता है। लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि अपने खर्चों से एक और रात गुँजित करने के बाद कल जो किरण अतिथि के बिस्तर पर आएगी वह अतिथि के लेखक के घर में आगमन के बाद पाँचवें सूर्य की परिचित किरण होगी। लेखक अतिथि से उम्मीद करता है कि सूर्य की किरणें जब चूमेगी और अतिथि घर लौटने का सम्मानपूर्ण निर्णय ले लोगा। लेखक कहता है कि वह उसकी सहनशीलता की आखरी सुबह होगी। उसके बाद भी अगर अतिथि नहीं जाएगा तो लेखक खड़ा नहीं हो पाएगा और लड़खड़ा जाएगा। लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि लेखक जानता है कि अतिथि देवता होता है, पर आखिर लेखक भी मनुष्य ही है। लेखक कोई अतिथि की तरह देवता नहीं है। लेखक कहता है कि एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते। देवता दर्शन देकर लौट जाता है। लेखक अतिथि को लौट जाने के लिए कहता है और कहता है कि इसी में अतिथि का देवत्व सुरक्षित रहेगा। लेखक अपने मन ही अतिथि से गुस्से में कहता है कि लेखक अपनी वाली पर उतरे, उसके पूर्व अतिथि को लौट जाना चाहिए। लेखक अंत में दुखी हो कर अतिथि से कहता है उफ, तुम कब जाओगे, अतिथि?

बहु विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1 – लेखक किससे चिंतित है?

- (ए) अपनी पत्नी से
- (बी) मेहमान से
- (सी) महँगाई से
- (डी) गर्मी से

उत्तर: (बी) मेहमान से

प्रश्न 2 – लेखक के घर में मेहमान कितने दिन गए थे?

- (ए) दो
- (बी) चार
- (सी) पांच
- (डी) तीन

उत्तर: (बी) चार

प्रश्न 3 – लेखक अतिथि से क्या चाहता है?

- (ए) वह लेखक के ही घर में रहे
- (बी) एक-दो दिन चला और रिकॉर्ड किया गया
- (सी) वह जल्दी जाए
- (डी) उनसे कोई नहीं

उत्तर: (सी) वह जल्दी जाए

प्रश्न 4 - लेखक से अतिथि को कलंदर की तारीखें कितने दिनों में बदली जा रही हैं?

- (ए) दो
- (बी) चार
- (सी) तीन
- (डी) एक

उत्तर: (ए) दो

प्रश्न 5 – लेखक को अतिथि से क्या उम्मीद थी?

- (ए) वह कुछ काम करना चाहता है
- (बी) वह लेखक की मदद करना चाहता है
- (सी) वह अगले दिन ही आ जाएगा
- (डी) उनसे कोई नहीं

उत्तर: (सी) वह अगले दिन ही आ जाएगा

प्रश्न 6 – लॉन्ड्री में कपड़े की बात डूबे लेखक की पत्नी को क्या लगा?

- (ए) अब मेहमान आएगा
- (बी) खर्चा बढ़ेगा
- (सी) समय लगेगा
- (डी) मेहमान और कुछ दिन रहेगा

उत्तर: (डी) मेहमान और कुछ दिन रहेगा

प्रश्न 7 – लेखक की पत्नी अतिथि के साकर से दुखी होकर क्या कहती है?

- (ए) पुलाव
- (बी) पुलाव
- (सी) आलू
- (डी) खेड

उत्तर: (ए) पुलाव

प्रश्न 8 – लेखक की सहनशक्ति किस दिन जवाब देने वाली थी?

- (ए) दूसरा
- (बी) पांचवां
- (सी) तीसरा
- (डी) चौथा

उत्तर: (बी) पांचवां

प्रश्न 9 - लेखक के अनुसार अतिथि के लौटने का समय अतिथि का सुरक्षित रहना क्या है?

- (ए) सामान
- (बी) इज्जत

(सी) देवता

(डी) मान

उत्तर: (सी) देवता

प्रश्न 10 – लेखक अंत में दुखी हो कर अतिथि से क्या कहता है?

(ए) और चिंता करोगे

(बी) कब तक किराए पर रहोगे

(सी) कितनी बात करोगे

(डी) उफ, तुम कब दोस्त, मेहमान?

उत्तर: (डी) उफ, तुम कब दोस्त, मेहमान?

सारांश

लेखक परिचय

लेखक – शरद जोशी

जन्म – 1931

तुम कब जाओगे अतिथि पाठ प्रवेश

इस पाठ में लेखक कहना चाहता है कि अतिथि हमेशा भगवान् नहीं होते क्योंकि लेखक के घर पर आया हुआ अतिथि चार दिन होने पर भी जाने का नाम नहीं ले रहा है। पाँचवे दिन लेखक अपने मन में अतिथि से कहता है कि यदि पाँचवे दिन भी अतिथि नहीं गया तो शायद लेखक अपनी मर्यादा भूल जाएगा। इस पाठ में लेखक ने अपनी परेशानी को पाठको से साँझा किया है –

तुम कब जाओगे अतिथि पाठ सार

- लेखक अपने घर में आए **अतिथि** को अपने मन में संबोधित करते हुए कहता है कि आज अतिथि को लेखक के घर में आए हुए चार दिन हो गए हैं और लेखक के मन में यह प्रश्न बार-बार आ रहा है कि **‘तुम कब जाओगे, अतिथि?’** लेखक अपने मन में अतिथि को कहता है कि वह जहाँ बैठे बिना संकोच के सिगरेट का धुआँ उड़ा रहा है, उसके ठीक सामने एक कैलेंडर है।
लेखक कहता है कि पिछले दो दिनों से वह अतिथि को कैलेंडर दिखाकर तारीखें बदल रहा है। ऐसा

अध्याय 3- तुम कब जाओगे, अतिथि

लेखक ने इसलिए कहा है क्योंकि लेखक अतिथि की सेवा करके थक गया है। पर चौथे दिन भी अतिथि के जाने की कोई संभावना नहीं लग रही थी। लेखक अपने मन में अतिथि को कहता है कि अब तुम लौट जाओ, अतिथि! तुम्हारे जाने के लिए यह उच्च समय अर्थात हाईटाइम बिल्कुल सही वक्त है। क्या उसे उसकी मातृभूमि नहीं पुकारती?

अर्थात क्या उसे उसके घर की याद नहीं आती। लेखक अपने मन में ही अतिथि से कहता है कि उस दिन जब वह आया था तो लेखक का हृदय ना जाने किसी अनजान डर के (किसी अनजान डर से) धड़क उठा था। अंदर-ही-अंदर कहीं लेखक का बटुआ काँप गया।

उसके बावजूद एक प्यार से भीगी हुई मुस्कराहट के साथ लेखक ने अतिथि को गले लगाया था और मेरी लेखक की पत्नी ने अतिथि को सादर नमस्ते की थी।

अतिथि को याद होगा कि दो सप्तिहों और रायते के अलावा उन्होंने मीठा भी बनाया था। इस सारे उत्साह और लगन के मूल में लेखक को एक उम्मीद थी। यह उम्मीद थी कि दूसरे दिन किसी रेल से एक शानदार अतिथि सत्कार की छाप अपने हृदय में ले कर अतिथि चला जायेगा। पर ऐसा नहीं हुआ! दूसरे दिन भी अतिथि मुस्कान बनाए लेखक के घर में ही बने रहे।

लेखक अपने मन में ही अतिथि से कहता है कि उन्होंने अपने दुःख को पी लिया और प्रसन्न बने रहे।

लेखक ने फिर दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की और रात्रि को अतिथि को सिनेमा दिखाया।

लेखक के सत्कार का यह आखिरी छोर था, जिससे आगे लेखक कभी किसी के लिए नहीं बढ़े। इसके तुरंत बाद लेखक को अनुमान था कि विदाई का वह प्रेम से ओत-प्रोत भीगा हुआ क्षण आ जाना चाहिए था, जब अतिथि विदा होता और लेखक उसे स्टेशन तक छोड़ने जाता।

पर अतिथि ने ऐसा नहीं किया। वह लेखक के घर पर ही रहा। लेखक अपने मन में ही अतिथि से कहता है कि तीसरे दिन की सुबह अतिथि ने लेखक से कहा कि वह धोबी को कपड़े देना चाहता है।

लेखक अतिथि से कहता है कि कपड़ों को किसी लॉण्ड्री में दे देते हैं इससे वे जल्दी धुल जाएंगे, लेखक के मन में एक विश्वास पल रहा था कि शायद अतिथि को अब जल्दी जाना है। लॉण्ड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और अतिथि अब भी लेखक के घर पर ही था। लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि उसके भारी भरकम शरीर से सलवटे पड़ी हुई चादर बदली जा चुकी है परन्तु अभी भी अतिथि यहीं है।

अतिथि को देखकर फूट पड़नेवाली मुस्कराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब कही गायब हो गई है।

ठहाकों के रंगीन गुब्बारे, जो कल तक इस कमरे के आकाश में उड़ते थे, अब दिखाई नहीं पड़ते।

परिवार, बच्चे, नौकरी, फिल्म, राजनीति, रिश्तेदारी, तबादले, पुराने दोस्त, परिवार-नियोजन, मँहगाई, साहित्य और यहाँ तक कि आँख मार-मारकर लेखक और अतिथि ने पुरानी प्रेमिकाओं का भी जिक्र कर लिया और अब एक चुप्पी है।

हृदय की सरलता अब धीरे-धीरे बोरियत में बदल गई है। पर अतिथि जा नहीं रहा। लेखक के मन में बार-

अध्याय 3- तुम कब जाओगे, अतिथि

बार यह प्रश्न उठ रहा है-तुम कब जाओगे, अतिथि? कल लेखक की पत्नी ने धीरे से लेखक से पूछा था, "कब तक टिकेंगे ये?" लेखक ने कंधे उचका कर कहा कि वह क्या कह सकता है? लेखक की पत्नी ने अब गुस्से से कहा कि वह अब खिंचड़ी बनाएगी क्योंकि वह खाने में हल्की रहेगी।

लेखक ने भी हाँ कह दिया। लेखक अपने मन ही कहता है कि अतिथि के सत्कार करने की उसकी क्षमता अब समाप्त हो रही थी। डिनर से चले थे, खिंचड़ी पर आ गए थे। अब भी अगर अतिथि नहीं जाता तो हमें लेखक और उसकी पत्नी को उपवास तक जाना होगा। लेखक चाहता है कि अतिथि अब चला जाए।

लेखक अपने मन ही कहता है कि लेखक जानता है कि अतिथि को लेखक के घर में अच्छा लग रहा है। दूसरों के यहाँ अच्छा ही लगता है। अगर बस चलता तो सभी लोग दूसरों के यहाँ रहते, पर ऐसा नहीं हो सकता। लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि अपने खर्चाटों से एक और रात गुँजित करने के बाद कल जो किरण अतिथि के बिस्तर पर आएगी वह अतिथि के लेखक के घर में आगमन के बाद पाँचवें सूर्य की परिचित किरण होगी।

लेखक अतिथि से उम्मीद करता है कि सूर्य की किरणें जब चूमेगी और अतिथि घर लौटने का सम्मानपूर्ण निर्णय ले लेगा। लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि लेखक जानता है कि अतिथि देवता होता है, पर आखिर लेखक भी मनुष्य ही है।

लेखक कोई अतिथि की तरह देवता नहीं है। लेखक कहता है कि एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते। देवता दर्शन देकर लौट जाता है। लेखक अतिथि को लौट जाने के लिए कहता है और कहता है कि इसी में अतिथि का देवत्व सुरक्षित रहेगा। लेखक अंत में दुखी हो कर अतिथि से कहता है उफ, तुम कब जाओगे, अतिथि?